उच्चतर माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की स्थिति पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन
(पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉक के सन्दर्भ में)

आशुतोष बछेती
प्रवक्ता, मॉडर्न इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी

सारांश– प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तराखण्ड राज्य के पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के विद्यालयों की उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव के तुलनात्मक अध्ययन का विवरण प्रस्तुत किया गया है। दोनों ब्लॉकों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए विद्यालयी क्षेत्र(ग्रामीण/शहरी), तथा विद्यालय प्रकार(सरकारी/प्राइवेट) को आधार बनाया गया है, इस हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित बालिका अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है। शोधकर्ता द्वारा यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा ब्लॉक पौड़ी के 4 विद्यालयों तथा ब्लॉक खिर्सू के 2 विद्यालयों का चयन किया गया है तथा फिर आकस्मिक प्रतिचयन विधि द्वारा उक्त ब्लॉकों से क्रमशः 125 तथा 125 बालिकाओं का प्रतिदर्श के रूप में चयन किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, तथा 't' परीक्षण आदि सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है, तथा विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष दिए गये हैं। शोध पत्र का विस्तृत विवरण अग्रलिखित है।

मुख्य बिन्दु– उच्चतर माध्यमिक, बालिका शिक्षा, पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारक।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात् जहाँ नारी की पूजा की जाती है वहां देवता निवास करते है। प्राचीनकाल में इसी भावना के साथ महिलाओं को उच्च स्थान तथा सम्मान प्राप्त था।कालान्तर में यह सम्मान घटता गया। वे वेदपाठ की अधिकारिणी भी नहीं रही तथा मात्र पति की छाया बनकर रह गयी, अर्थात् हर स्थिति में नारी को पुरूष के अनुकूल रहना पड़ता था। मुस्लिम काल में तो महिलाओं का शोषण चरम सीमा पर पहुँच गया, वे मात्र पुरूषों की गुलाम बनकर रह गयी। अंग्रेजी शासनकाल में यही स्थिति रही। स्वतन्त्रता के पश्चात् महिलाओं को संवैधानिक रूप से पुरूषों के समान अधिकार दिये गये, परंतु व्यवहारिक रूप से समान अधिकार नहीं मिल सके।

भारत में महिला साक्षरता दर (वर्ष 1951–2011)

वर्ष	महिला साक्षरता दर (प्रतिशत में)	पुरूष साक्षरता दर (प्रतिशत में)
1951	8.86	27.16
1961	15.35	40.40
1971	21.97	45.96
1981	29.76	56.38
1991	39.29	64.13
2001	54.16	75.26
2011	65.46	82.14

वर्तमान समय में बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार हुआ है आज बालिकायें महिलायें शिक्षा के क्षेत्र में बालकों से कदम से कदम मिलाकर चल रही है परन्तु निम्न वर्गों की बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा की बात की जाये तो उनकी दशा अत्यन्त निराशाजनक है इसका मूल कारण आर्थिक विपन्नता भी है क्योंकि उनका भरण पोषण करना ही मुश्किल होता है वे शिक्षा के बारे में सोच भी नहीं सकते।

उत्तराखण्ड में बालिका/महिला शिक्षा :–

उत्तराखण्ड की बालिकाओं/महिलाओं ने राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी कई कीर्तिमान स्थापित किये है।वर्तमान समय में विभिन्न सरकारी तथा स्वंयसेवी संस्थाओं के प्रयासों द्वारा बालिका विकास हेतु सराहनीय कार्य किए जा रहे हैं, परंतु अपेक्षित परिणाम प्राप्त नही हो पाए हैं, इसलिए और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है। निम्नलिखित आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता के पश्चात् महिला शिक्षा की स्थिति में निरन्तर सुधार हुआ है, परंतु शैक्षिक दृष्टि उनमें अभी भी पुरूषों के मुकाबले पिछड़ापन देखने को मिलता है।

उत्तराखण्ड राज्य के साक्षरता प्रतिशत दर का विवरण (2011 की जनगणना के अनुसार)

जिला	साक्षरता दर		
	स्त्री	पुरूष	व्यक्ति
देहरादून	79.61	90.32	85.24
नैनीताल	78.21	91.09	84.85
पौड़ी	73.26	93.18	82.59
चमोली	73.20	94.18	83.48
पिथोरागढ़	72.97	93.45	82.93
रूद्रप्रयाग	70.94	94.97	82.09
अल्मोड़ा	70.44	93.57	81.06
बागेश्वर	69.59	93.20	80.69
चम्पावत	68.81	92.65	80.73
उद्यमसिंह नगर	65.73	82.48	74.44
उत्तरकाषी	62.23	89.26	75.98
टिहरी	61.77	89.91	75.10
हरिद्वार	65.96	82.26	74.62
उत्तराखण्ड	70.70	88.33	79.63

पौड़ी जिले में महिला शिक्षा :—उत्तराखण्ड राज्य निर्माण के बाद पौड़ी जिले का महिला शिक्षा की दृष्टि से अन्य जिलों की अपेक्षा अधिक विकास हुआ है। आंकड़ों से स्पष्ट है कि 2001 से 2011 के दशक में महिला साक्षरता दर में लगभग 7 प्रतिशत की वृद्धि हुई है महिला साक्षरता प्रतिशत जहाँ 2001 में 66.14 था वहीं 2011 में 73.26 प्रतिशत रहा। इस प्रकार देखा जा सकता है कि महिला शिक्षा का निरन्तर विकास हो रहा है।
पौड़ी जिले की साक्षरता की स्थिति का विवरण निम्न प्रकार है।—

वर्ष	कुल साक्षरता	पुरूष साक्षरता	महिला साक्षरता
2001	77.99	91.47	66.14
2011	82.59	93.18	73.26

आँकड़ों से यह भी पता चलता है कि पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की शैक्षिक स्थिति बहुत कम सुदृढ़ है पुरूष साक्षरता दर तथा महिला साक्षरता दर के मध्य लगभग 20 प्रतिशत का बड़ा अन्तर है अतः स्त्रियों की शैक्षिक स्थिति में सुधार तथा इस अन्तर को कम करने हेतु पौड़ी जिले में स्त्री शिक्षा की ओर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है।

पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉक में बालिका शिक्षा :—पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉक पौड़ी जिले के 15 ब्लॉकों में से दो ब्लॉक हैं जिले की साक्षरता के विकास में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है विभिन्न प्रकार के सरकारी तथा गैर सरकारी प्रोत्साहनों व प्रयासों के प्रभाव के कारण इन ब्लॉकों की शिक्षा की स्थिति सम्माजनक है।वर्तमान में इन ब्लॉकों के अन्तर्गत संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तथा उनमें अध्ययनरत छात्र—छात्राओं की संख्या का विवरण निम्न प्रकार से है :—

पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या का विवरण(सत्र 2010—11)

ब्लॉक	सरकारी विद्यालय	निजी विद्यालय	कुल संख्या	बालिका विद्यालय
पौड़ी	11	08	19	02
खिर्सू	10	08	18	01

पौड़ी ब्लॉक में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र—छात्राओं की संख्या का विवरण

विद्यालय प्रकार	छात्र	छात्रायें	कुल
सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत	443	550	1003
निजी विद्यालयों में अध्ययनरत	405	247	642
कुल	848	797	1645

खिर्सू ब्लॉक में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की संख्या का विवरण।

विद्यालय प्रकार	छात्र	छात्रायें	कुल
सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत	460	535	995
निजी विद्यालयों में अध्ययनरत	522	322	874
कुल	982	857	1839

विधार्थियों की नामांकन संख्या के आधार पर देखा जाय तो पता चलता है कि पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के उच्च माध्यमिक स्तरीय विद्यालयों छात्रों की नामांकन संख्या (1830) छात्राओं की नामांकन संख्या (1657) से अधिक है अतः छात्राओं के शैक्षिक विकास हेतु प्रत्येक स्तर से और अधिक प्रयास किये जाने चाहिए।

वर्तमान समस्या की उत्पत्ति :– वर्तमान समय में महिलाओं व बालिकाओं की स्थिति में पूर्व समय की अपेक्षा सुधार हुआ है। उन्हें पुरूषों से भी अधिक अधिकार प्रदान किये गये हैं उनके लिये विभिन्न प्रकार के संवैधानिक तथा सरकारी प्रावधान किये गये है, परन्तु यह देखा गया है कि विभिन्न प्रावधानों, योजनाओं व सुविधाओं के होने के बावजूद भी बालिकाओं/महिलाओं का शैक्षिक तथा जीवन स्तर अपेक्षाकृत उच्च स्तर पर नहीं पहुँच पाया है। अतः यह समस्या उत्पन्न हो गयी है कि इस सबका कारण क्या है तमाम प्रयासों के बावजूद भी यह स्थिति है इसके क्या कारण हो सकते हैं? क्या अभिभावकों की और से कोई कमी रह गयी है? अर्थात् या फिर सामाजिक कारक इसके लिये जिम्मेदार हैं। विद्यालयी व्यवस्था में कौन से कारक इस हेतु जिम्मेदार हैं? तथा सरकारी प्रोत्साहन की विफलता के कारक क्या है?

समस्या का औचित्य :–उच्चतर माध्यमिक स्तर किशोरावस्था से संबंधित स्तर होता है यह किसी भी मानव जीवन का अत्यन्त महत्वपूर्ण समय होता है, बालिकाओं के सन्दर्भ में यह उनके भावी जीवन की आधारषिला होता है। अतः आवश्यकता है कि बालिकाओं को सही मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन दिया जाय इस हेतु आवश्यक है कि पारिवारिक, विद्यालयी, सामाजिक तथा सरकारी कारकों द्वारा बालिका शिक्षा के विकास हेतु प्रयास किया जाय, तथा यह तभी सम्भव है, जब इन कारकों द्वारा समन्वयात्मक ढंग से कार्य किया जाएगा।

समस्या कथन :– उच्चतर माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की स्थिति पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन (पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉक के सन्दर्भ में)।

समस्या का सीमांकन :– प्रस्तुत शोध को सुगमता तथा क्रमबद्धता प्रदान करने हेतु शोधकर्ता ने निम्नलिखित सीमांकन किये है।–

1– प्रस्तुत शोध पौड़ी जिले के पौड़ी ब्लॉक के शहरी क्षेत्र (रा0क0इ0का0 पौड़ी) तथा ग्रामीण क्षेत्र (ज0इ0का0 ल्वाली, रा0इ0का0 ओजली तथा रा0इ0का0 क्यार्क) की कक्षा 12 की छात्राओं पर किया गया है।

2– प्रस्तुत शोध पौड़ी जिले के खिर्सू ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्र (उच्च माध्यमिक सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज, श्रीकोट) तथा शहरी क्षेत्र (रा0बा0इ0का0, श्रीनगर) की कक्षा 12 वीं छात्राओं पर किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1– पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के सरकारी विद्यालयों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना।

2– पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के निजी विद्यालयों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना।

3– पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना।

4– पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :–

1– पौड़ी ब्लॉक के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2– पौड़ी ब्लॉक के सरकारी तथा निजी विद्यालयों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3– खिर्सू ब्लॉक के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4– पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के सरकारी विद्यालयों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5– पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के निजी विद्यालयों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6– पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

7– पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि :–प्रस्तुत समस्या "बालिका शिक्षा की स्थिति पर पारिवारिक, सामाजिक और विद्यालयी कारकों के प्रभाव के अध्ययन" हेतु वर्तमानकालीन स्थिति का वर्णन किया जाना है अतः प्रस्तुत शोध विषय को ध्यान में रखते हुये अनुसधानकर्ता ने वर्णनात्मक विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि के पदों का अनुकरण किया है। प्रस्तुत शोध, विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं पर किया गया है अतः सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत विद्यालयी सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

चर :– प्रस्तुत अध्ययन में बालिका शिक्षा की स्थिति पर सामाजिक पारिवारिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव का अध्ययन किया जा रहा है। अतः ये कारक स्वतंत्र चर तथा बालिकाओं की शिक्षा की स्थिति परतंत्र चर है।

जनसंख्या :–वर्तमान अध्ययन में पौड़ी जिले के पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉक के उच्च माध्यमिक विद्यालयों की समस्त बालिकाओं को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श :– यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा ब्लॉक पौड़ी के 4 विद्यालयों तथा ब्लॉक खिर्सू के 2 विद्यालयों का चयन किया गया है तथा फिर आकस्मिक प्रतिचयन विधि द्वारा उक्त ब्लॉकों से क्रमशः 125 तथा 125 बालिकाओं को चुना गया है।

अध्ययन हेतु चयनित विद्यालयों तथा उनमें अध्ययनरत बालिकाओं की सूची निम्नवत् है।

क्र0सं0	विकासखण्ड	विद्यालय का नाम	छात्राओं की संख्या	योग
1	पौडी	रा0क0इ0का0 पौड़ी	50	125
2		रा0इ0का0 ओजली	18	
3		रा0इ0का0 क्यार्क	17	
4		ज0इ0का0 ल्वाली	40	
1	खिर्सू	रा0क0इ0का0 श्रीनगर	53	125
2		स0वि0म0इ0का0 श्रीकोट	72	
कुल योग				250

शोध कार्य हेतु प्रयुक्त उपकरण का विवरण :– प्रस्तुत समस्या के समाधान हेतु शोधकर्ता ने स्वनिर्मित **"बालिका अभिवृत्ति मापनी"** का प्रयोग किया है। इस मापनी में कथनों को क्षेत्रों की विशिष्टताओं तथा छात्राओं की सुविधा के अनुसार निम्नलिखित चार क्षेत्रों या आयामों में विभक्त किया गया है।

क्र0सं0	आयाम	प्रश्नों की संख्या
1	पारिवारिक अधिकार तथा स्वतंत्रता	13
2	पारिवारिक प्रोत्साहन तथा भागीदारी	15
3	विद्यालयी प्रोत्साहन तथा भागीदारी	15
4	सामाजिक तथा सरकारी प्रोत्साहन	13
	कुल योग	56

प्रस्तुत मापनी में 56 कथन हैं कथनों के प्रकृति के आधार पर प्रतिक्रियाओं हेतु अंकों का निर्धारण किया गया है। प्रस्तुत मापनी में 27 सकारात्मक, 17 नकारात्मक तथा 12 अनिष्चित कथन दिये गये है। प्रत्येक कथन के लिये तीन प्रतिक्रियाएं हैं :–

(1) सहमत (2) अनिश्चित (3) असहमत

सांख्यिकीय विधि :– सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों को व्यवस्थित करने के पश्चात् शोधकर्ता ने मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, तथा 't' परीक्षण आदि सांख्यिकीय प्रविधियों के माध्यम से ऑकड़ों का विश्लेषण किया है।

निष्कर्ष :–ऑकड़ों का विश्लेषण तथा अर्थापन के पश्चात् इस आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये जो इस प्रकार है :–

परिकल्पना 1 :– पौड़ी ब्लॉक के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

पौड़ी ब्लॉक के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव के 'टी' मान का विवरण।

निवास क्षेत्र	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't' मूल्य	सार्थकता स्तरों पर 't'मूल्य df = 123 हेतु	सार्थकता परीक्षण
शहरी	50	80.10	6.90	3.23	सार्थकता स्तर 0.01 पर 't' मान=2.63	सार्थक
ग्रामीण	75	76.00	7.10			

निष्कर्ष – प्राप्त ऑकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि गणना से हमें टी मान 3.23 प्राप्त होता है जो कि मानक सारणी में स्वतंत्रता कोटि 123 पर तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर दिये गये टी मान से अधिक है अतः हम कह सकते है कि 0.01 सार्थकता स्तर पर पौड़ी ब्लॉक की ग्रामीण तथा शहरी की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में सार्थक अन्तर है। इस प्रकार हमारी निराकरणीय परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

परिकल्पना 2 :– पौड़ी ब्लॉक के सरकारी तथा निजी विद्यालयों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

पौड़ी ब्लॉक के सरकारी तथा निजी विद्यालयों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव के 'टी' मान का विवरण।

विद्यालय प्रकार	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't' मूल्य	सार्थकता स्तरों पर 't' मूल्य df = 123 हेतु	सार्थकता परीक्षण
सरकारी	85	79.10	10.00	2.99	सार्थकता स्तर 0.01 पर 't' मान=2.63	सार्थक
निजी	40	75	7.40			

निष्कर्ष – प्राप्त ऑकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि गणना से हमें टी मान 2.99 प्राप्त होता है, जो कि मानक सारणी में स्वतंत्रता कोटि 123 पर तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर दिये गये टी मान 2.63 से अधिक है हम सार्थकता स्तर 0.01 पर निर्णय लेते है कि पौड़ी ब्लॉक की सरकारी तथा निजी विद्यालयों की बालिकाओं की

शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर है। अतः हमारी निराकरणीय परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

परिकल्पना 3 :– खिर्सू ब्लॉक के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

खिर्सू ब्लॉक के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव के 'टी' मान का विवरण।

जाति वर्ग	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't' मूल्य	सार्थकता स्तरों पर 't' मूल्य df = 124 हेतु	सार्थकता परीक्षण
सामान्य	72	83.10	6.30	3.29	सार्थकता स्तर 0.01 पर 't' मान=2.63	सार्थक
निम्न	53	78.30	9.10			

निष्कर्ष – प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि गणना से हमें टी मान 3.29 प्राप्त होता है जो कि मानक सारणी में 124 स्ततंत्रता कोटि पर तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर दिये गये टी मान 2.63 से अधिक है। इस प्रकार खिर्सू ब्लॉक की समान्य तथा निम्न वर्ग की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में 0.01 सार्थक स्तर पर अन्तर सार्थक है। अतः हमारी निराकरणीय परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

परिकल्पना 4 :– पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के सरकारी विद्यालयों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के सरकारी विद्यालयों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव के 'टी' मान का विवरण।

ब्लॉक का नाम	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't' मूल्य	सार्थकता स्तरों पर 't' मूल्य df = 136 हेतु	सार्थकता परीक्षण
पौड़ी	85	79.10	10.00	2.24	सार्थकता स्तर 0.01 पर 't' मान=2.62	सार्थक नहीं
खिर्सू	53	75.40	9.10		सार्थकता स्तर 0.05 पर 't' मान=1.98	सार्थक नहीं

निष्कर्ष – प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि गणना से हमें टी मान 2.24 प्राप्त होता है जो कि मानक सारणी में 136 स्ततंत्रता कोटि पर तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर दिये गये टी मान 2.62 से कम है। इस प्रकार पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के सरकारी विद्यालयों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में 0.01 सार्थक स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है। अतः हमारी निराकरणीय परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

परिकल्पना 5 :– पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के निजी विद्यालयों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के निजी विद्यालयों की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव के 'टी' मान का विवरण।

ब्लॉक का नाम	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't' मूल्य	सार्थकता स्तरों पर 't' मूल्य df = 110 हेतु	सार्थकता परीक्षण
पौड़ी	40	75	7.40	5.87	सार्थकता स्तर 0.01 पर 't' मान=2.63	सार्थक

निष्कर्ष – प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि गणना से हमें टी मान 5.87 प्राप्त होता है जो कि मानक सारणी में 110 स्ततंत्रता कोटि पर तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर दिये गये टी मान 2.63 से अधिक है। इस प्रकार पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के समान्य वर्ग की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में 0.01 सार्थक स्तर पर अन्तर सार्थक है। अतः हमारी निराकरणीय परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

परिकल्पना 6 :– पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव के 'टी' मान का विवरण।

ब्लॉक का नाम	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't' मूल्य	सार्थकता स्तरों पर 't' मूल्य df = 145 हेतु	सार्थकता परीक्षण
पौड़ी	75	76.00	7.10	6.40	सार्थकता स्तर 0.01 पर 't' मान=2.62	सार्थक

निष्कर्ष – प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि गणना से हमें टी मान 6.40 प्राप्त होता है जो कि मानक सारणी में 145 स्ततंत्रता कोटि पर तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर दिये गये टी मान 2.62 से अधिक है। हम (0.01) सार्थकता स्तर पर निर्णय लेते है कि पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में अन्तर सार्थक है। अतः हमारी निराकरणीय परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

परिकल्पना 7 :– पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव के 'टी' मान का विवरण।

ब्लॉक का नाम	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't' मूल्य	सार्थकता स्तरों पर 't' मूल्य df = 101 हेतु	सार्थकता परीक्षण
पौड़ी	50	80.10	6.90	1.58	सार्थकता स्तर 0.01 पर 't' मान=2.63	सार्थक नहीं
खिर्सू	53	78.30	9.10			

निष्कर्ष – प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि गणना से हमें टी मान 1.58 प्राप्त होता है जो कि मानक सारणी में 101 स्ततंत्रता कोटि पर तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर दिये गये टी मान 2.63 से अधिक है। हम 0.01 सार्थकता स्तर पर निर्णय लेते है कि पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉकों के शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की शिक्षा पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव में अन्तर सार्थक नहीं है। अतः हमारी निराकरणीय परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

सुझाव :– प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देष्य "उच्चतर माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की स्थिति पर पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी कारकों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन (पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉक के सन्दर्भ में)" करना है यह अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह माध्यमिक स्तर की बालिकाओं के भावी जीवन के निर्माण हेतु आधार का कार्य करता है अतः इस स्तर पर बालिकाओं की शिक्षा तथा जीवन स्तर की स्थिति की समीक्षा एक महत्वपूर्ण कार्य है।

इस शोधकार्य से बालिकाओं की शिक्षा के सम्बन्ध में निम्न तथ्य स्पष्ट होते है।

1– बालिकाओं की शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों का समुचित ढंग से अध्ययन किया जाना चाहिए जिससे कि उनकी शिक्षा में आने वाली बाधाओं तथा समस्याओं का निदान किया जा सके तथा भावी नीति हेतु सही निर्णय लिया जा सके।
2– महिला जागरूकता कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए ताकि महिलायें व बालिकायें अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों को समझ सकें तथा उनमें उचित सोच का विकास हो सकें।
3– ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं हेतु उनके परिवार, समाज तथा विद्यालय प्रषासन द्वारा सकारात्मक रवैया अपनाया जाना चाहिये तथा उनकी शिक्षा व जीवन के लिये उचित संसाधनों व सुविधाओं की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि वे कुशलतापूर्वक अपने जीवन क्षेत्र में आगे बढ़ सकें।
4– महिला समाज की अनेक वर्गों मे स्तरीकृत है अतः देखा जाता है कि कहीं महिलाओं की शैक्षिक स्थिति मजबूत है तो कहीं महिलायें शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ी है अतः सामाजिक जनचेतना आवष्यक है ताकि इस अनियमितता को दूर किया जा सके।
5– बालिकाओं की शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों को सषक्त किया जाना चाहिये तथा उन्हें समन्वयात्मक रूप से कार्य करना चाहिये ताकि बालिका शिक्षा के सभी पक्षों का समुचित विकास हो सकें।
6– अभिभावकों, षिक्षकों व सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा बालिका शिक्षा के विकास हेतु योजना का निर्माण तथा क्रियान्वयन किया जाना चाहिये।
7– बालिकाओं के समुचित शैक्षिक विकास के लिये उनको पाठ्य गतिविधियों के साथ–साथ उन्हें पाठ्येत्तर गतिविधियों में भाग लेने के अवसर भी प्रदान किये जाने चाहिये।
8– महिलाओं व बालिकाओं की समुचित प्रगति हेतु समाज की संकुचित सोच में बदलाव आवष्यक है।

भविष्य में अनुसंधान हेतु सुझाव :–

भविष्य में बालिका शिक्षा पर निम्नलिखित क्षेत्रों में शोध कार्य किया जा सकता है।

1– प्रस्तुत अध्ययन केवल माध्यमिक स्तर विषेषकर उच्चतर माध्यमिक स्तर की बालिकाओं के लिये किया गया है इसी प्रकार अन्य वर्गों की छात्राओं पर भी अध्ययन किया जा सकता है।
2– प्रस्तुत अध्ययन में बालिकाओं की स्थिति को प्रभावित करने वाले कारकों को मुख्यतः तीन भागों बांटा गया है अन्य कारकों के आधार पर भी अध्ययन किया जा सकता है।
3– प्रस्तुत अध्ययन को पौड़ी तथा खिर्सू ब्लॉक की बालिकाओं तक सीमित किया गया है इस अध्ययन को अन्य ब्लॉकों तथा बड़े स्तर पर भी किया जा सकता है।
4– प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर की छात्राओं को लिया गया है प्राथमिक व उच्च स्तर पर भी यह अध्ययन किया जा सकता है।
5– प्रस्तुत अध्ययन में तुलना के आधार क्षेत्रीय वर्ग, जाति वर्ग तथा विषय वर्ग को बनाया गया है अन्य वर्गों के आधार पर भी अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1– श्रीवास्तव, डी0एन0 – *"अनुसंधान की विधियां"*, विनोद प्रकाशन मन्दिर, आगरा।
2– कौशिक, आशा – *"नारी सशक्तिकरणः विमर्श एंव यथार्थ"*, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर (2004)।
3– कुमार, सी0 – *"उत्तराखण्ड की भावी महिला नीतिः कुछ महत्वपूर्ण सुझाव"*, हिमालय एक्शन रिसर्च सेन्टर (हार्ट), देहरादून (2004)।
4– वर्मा, बिहारी सवालिया– *"महिला जागृति तथा सशक्तिकरण"*–2005।
5– कपिल, एच0के0 – *"सांख्यिकी के मूलतत्व"*, एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, आगरा।

पत्र तथा पत्रिकायें

1– श्रीवास्तव, दिनेश (2008) – *भारत में महिला सशक्तिकरण के प्रयास,* प्रतियोगिता दर्पण, सितम्बर।
2– आलम गजनफर, अली इरषाद (2008) – *ग्रामीण भारत में महिला सशक्तिकरण*।
3– खुल्लर माया (1997) – *इमरजेन्स ऑफ दि विमेन्स इन इण्डिया,* एषियन जर्नल ऑफ विमेन्स स्टडीज।
4– http://unmukth.worldpress.com/2007/10/24/women empowerment rights.
5– www.chauthiduniya.com